प्रकाशनार्थ

पटना, 23 जुलाई। आज शुक्रवार को एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) द्वारा एक ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया जिसका शीर्षक था - ''ऋणजनित बाधाएं और अंतर्देशीय उत्पादन पुनर्गठन - महाराष्ट्र से प्रमाण''। व्याख्यान पटना आइआइटी की संकाय सदस्य डॉ. मेघना दत्ता द्वारा दिया गया। व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता आद्री की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अस्मिता गुप्ता ने की।

अपने व्याख्यान में डॉ. दत्ता ने कहा कि ''आर्थिक विकास के स्रोत के रूप में छोटे और सीमांत उद्यमों पर बढ़ते जोर के कारण इन व्यवसायों की जरूरतें पूरी करने के लिए ऋण बाजार की दक्षता पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। विगत वर्षों के दौरान ऋण देने की औपचारिक प्रक्रिया से असंगठित उत्पादन इकाइयों को बाहर रखने के कारण वर्तमान उत्पादन ढांचे की आउटसोर्सिंग बढ़ती चली गई। इसके चलते छोटे फर्म 'पीस रेट' के आधार पर बड़े औपचारिक फर्मों के लिए काम करने के लिए बाध्य हैं। यह चीज अनौपचारिक फर्मों के मालिकों को भी प्रभावी तौर पर महज 'पीस रेट' आधारित दिहाड़ी मजदूर में बदलकर रख दे रही है।''

असंगठित क्षेत्र की इकाइयों के लिए औपचारिक ऋण का अभाव लंबे समय से पूरे देश में एक ज्वलंत मुद्दा रहा है और सरकारों की प्रतिक्रिया बिल्कुल संतोषजनक नहीं रही है।

इस व्याख्यान में पटना और देश के अन्य स्थानों के अनेक विद्वानों और शिक्षाविदों ने भाग लिया। इस अवसर पर आद्री के सदस्य सचिव प्रोफेसर प्रभात पी घोष भी उपस्थित थे।

(अंजनी कुमार वर्मा)